स्वीडन में पहली बार रोगी में प्रत्यारोपित किया गया पेसमेकर

1958 में आज ही के दिन स्वीडन में अर्ने लार्सन नामक 43 वर्षीय हृदय रोगी में विश्व का पहला पेसमेकर लगाया गया था। रुन एल्मक्विस्ट ने इस पेसमेकर का आविष्कार किया था, जिसे हृदय रोग से पीड़ित रोगी की त्वचा के नीचे प्रत्यारोपित करने के लिए डिजाइन किया गया था।

खलिहान में लगी आग ने शिकागो शहर को तबाह कर दिया

1871 में आज ही अमेरिका के शिकागो में भीषण आग लगी थी। एक खलिहान से शुरू हुई आग ने तीन दिन में शहर के एक तिहाई हिस्से को खंडहर में बदल दिया था। इसमें 300 लोगों की जान गई थी और एक लाख लोग बेघर हो गए थे। इसे ग्रेट शिकागो फायर कहा जाता है।

अपनी विशिष्ट संवाद अदायगी के लिए जाने जाते थे राजकुमार

अपने तकिया कलाम जानी से दर्शकों के दिलों में जगह बनाने वाले अभिनेता राजकुमार का जन्म 1926 में आज ही के दिन बलूचिस्तान में हुआ था। अभिनेता बनने से पहले वह मुंबई पुलिस में सब इंस्पेक्टर थे। थाने में आए एक निर्माता की सलाह पर उन्होंने अभिनय की ओर रुख किया। वर्ष 1952 में फिल्म रंगीली से अभिनय करियर की शुरुआत की। वर्ष 1957 में फिल्म मदर इंडिया ने उन्हें बालीवुड में स्थापित कर दिया। नीलकमल, पाकीजा, तिरंगा, वक्त, सौदागर, हमराज सहित 70 से अधिक फिल्मों में उन्होंने अभिनय किया।

माइनस 20 डिग्री में गर्माहट देंगे याक के बालों से तैयार कोट

आशा मेहता, लुधियाना

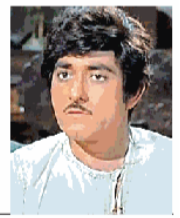

- **राष्ट्रीय प्राकृतिक फाइबर इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान कोलकाता के विज्ञानियों ने किया तैयार**
- **ट्रायल के तौर पर तैनात भारतीय सेना के जवानों के लिए भेजे गए हैं, जो हिमालय में हैं तैनात। पहले बालों को फेंक दिया जाता था**

भारतीय कृषि अनुसंधान षभाकृअनुप राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आइसीएआर निनफेट) कोलकत्ता के विज्ञानियों ने हिमालयन याक के बालों के साथ जूट मिलाकर बनाए गए धागे से लांग कोट, हाफ जैकेट और शाल सहित कई तरह के वस्त्र तैयार किए हैं। ये वस्त्र अत्याधिक सर्दी में भी गर्माहट देंगे। विशेषकर कोट तो माइनस 20 डिग्री सेल्सियस तापमान के तापमान को भी सहन कर सकता है। याक के बालों से तैयार एक शाल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट की गई थी। पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के आइसीएआर सेंट्रल इंस्टीटयूट आफ पोस्ट हार्वेस्ट इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी (सिफेट) में आयोजित मेले में इन वस्त्रों को प्रदर्शित किया गया था।

निनफेट के ट्रांसफर टेक्नोलाजी डिवीजन के पूर्व हेड व प्रिंसिपल साइंटिस्ट डा. अलोक नाथ राय व वरिष्ठ विज्ञानी डा. कार्तिक के समानता ने बताया कि अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर व बंगाल में याक पाले जाते हैं। याक के बाल बेहद सुंदर प्राकृतिक रेशा है। हर साल मार्च-अप्रैल में पालकों को अपने याक के बालों को काटना पड़ता है। देश के जिन हिस्सों में तापमान माइनस तक चला जाता है, वहां के लिए याक के बालों से बने वस्त्र बेहद मददगार साबित होंगे। उन्हें ठंड से बचाव के लिए अधिक गर्म कपड़े नहीं पहनने होंगे।

याक के बालों से तैयार कोट। सौ. निनफेट

बनाए गए दो तरह के फाइबर : हमने इनके बालों से दो तरह के फाइबर बनाए हैं। याक के ऊपर वाले हिस्से के बालों को गार्ड फाइबर कहा जाता है, जबकि शरीर के साथ लगे रहने वाले नीचे वाले हिस्से के बालों को डाउन फाइबर कहते हैं। गार्ड फाइबर बहुत मोटा होता है। एक बड़े याक से 700 ग्राम डाउन फाइबर और दो से ढाई किलोग्राम गार्ड फाइबर मिलता है। गार्ड फाइबर से हमने लांग कोट व हाफ जैकेट बनाएं, जबकि डाउन फाइबर से शाल बनाई है।

ऐसे तैयार किए जाते हैं याक के बालों से वस्त्र : डा. आलोक राय बताते हैं कि सबसे पहले याक के कटे हुए बालों को अच्छे से धो लिया जाता है। इसके बाद बालों से गार्ड फाइबर व डाउन फाइबर बनाते हैं। हमने दो तरह से धागे तैयार किए। एक में हमने 50 प्रतिशत याक के बाल और 50 प्रतिशत जूट को मिक्स किया। दूसरे में 75 प्रतिशत याक के बाल और 25 प्रतिशत जूट को मिक्स किया। फिर याक के बालों को जूट के साथ मिश्रित करके धागा तैयार किया है। केमिकली मोडिफाई धागों से रंगीन वस्त्र बनाए गए।

आठ हजार फीट की ऊंचाई पर माइनस 20 डिग्री सेल्सियस में ट्रायल : लांग कोट को 10 से 12 डिग्री सेल्सियस वाली सामान्य ठंड में पहनेंगे तो उसमें बहुत ज्यादा गर्मी लगेगी। तापमान दस डिग्री से नीचे होगा तो ही इसे पहना जा सकता है। हमने ट्रायल के तौर पर आठ हजार फीट की ऊंचाई पर माइनस 20 डिग्री सेल्सियस वाले तापमान में तैनात भारतीय जवानों को लांग कोट पहनने के लिए दिए। उनके अनुसार इसमें ठंड महसूस नहीं हो रही है। शाल व हाफ जैकेट पांच डिग्री तापमान को भी सहन कर सकती है।

जलवायु परिवर्तन के कारण ध्रुवीय भालू बच्चों के लिए नहीं जुटा पा रही हैं दूध

टोरंटो, प्रेट्र: जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्री बर्फ पिघल रहे हैं। इसकी वजह से यहां निवास करने वाले ध्रुवीय भालू को भोजन तक पहुंच के बिना कई महीनों तक जमीन पर रहना पड़ता है। यह उपवास अवधि सभी भालुओं के लिए चुनौतीपूर्ण है। खास तौर पर उन मादा ध्रुवीय भालू के लिए स्थिति और विकट हो जाती है, जो उस अवधि में शावकों को दूध पिला रही होती हैं। भोजन नहीं मिलने के कारण दूध कम बनता है और वह शावकों को स्तनपान नहीं करवा पाती हैं। मरीन इकोलाजी प्रोग्रेस सीरीज में प्रकाशित शोध में यह बात सामने आई है। विज्ञानियों का मानना है कि ध्रुवीय भालू की आबादी में गिरावट की एक बड़ी वजह मान रहे हैं। ध्रुवीय भालू गर्मी के महीनों में बर्फ पिघलने से जमीन पर चले जाते हैं और उस समय उपवास की स्थिति में समय बिताते हैं। अब आम दिनों में भी यही स्थिति बन रही है।

एक नया बोर ड्रिल करने का सुझाव और स्टील का एक कैप्सूल बनाने का प्रस्ताव दिया, जिसे खदान में भेजकर वहां फंसे लोगों को एक-एक कर बाहर निकाला जा सके। तीन दिन तक चले बचाव अभियान के दौरान गिल सभी मजदूरों को जीवित निकालने में कामयाब रहे। 1991 में जसवंत सिंह गिल को इसी जाबांजी के लिए राष्ट्रपति की ओर से सर्वोत्तम जीवन रक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें 'कैप्सूल गिल' के नाम से भी पुकारा जाने लगा था। इसी घटनाक्रम पर टीनू सुरेश देसाई ने मिशन रानीगंज बनाई है। कोयला खदान इंजीनियर जसवंत सिंह गिल की भूमिका अक्षय कुमार ने निभाई है।

फिल्म की शुरुआत कोयला खदानों का इतिहास बताने के साथ होती है। आरंभ में ही जसवंत गिल की दिलेरी का परिचय दे दिया जाता है। फिर एक गाने के बाद मजदूरों की जिंदगी की छोटी-सी झलक दिखाकर कहानी टीनू सुरेश ने तकनीकी रूप से जटिल इस फिल्म को सरल तरीके से बताने का प्रयास किया है। खदानों में फंसे मजदूरों की मनोदशा का उन्होंने संजीदा चित्रण किया है। वह मजदूरों के खदान में फंसने से लेकर बाहर निकलने तक तनाव का माहौल बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। हालांकि तकनीकी स्तर पर फिल्म थोड़ी कमजोर है। कोयला खदान का सेट स्पेशल इफेक्ट पर आश्रित है। यह स्क्रीन पर साफ नजर आता है। मध्यांतर से पहले फिल्म बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ती है। ऐसा लगता है कि सभी कोयला खदान की कार्यप्रणाली से परिचित है। मिशन रानीगंज का भार पूरी तरह अक्षय कुमार के कंधों पर है। दबंग खदान मजदूर की भूमिका में रवि किशन ध्यान खींचते हैं। फिल्म केसरी के बाद एक बार फिर परिणीति इस फिल्म में अक्षय कुमार के साथ नजर आई हैं। उनके हिस्से में नाच गाने के साथ चंद भावनात्मक दृश्य हैं।

-स्मिता श्रीवास्तव

★★★★★ उत्कृष्ट ★★★★ बहुत अच्छी ★★★ अच्छी ★★ औसत ★ औसत से कम

अपनी राय हमें जरूर बताएं : feature@jagran.com